# आरंभिक शिक्षा में इतिहास के उद्देश्य

जॉन डिवी

*इस लेख में जॉन डिवी इतिहास को तथ्यों और जानकारियों के ढेर के रूप में देखने के बजाए ऐसी शक्ति के रूप में देखते हैं जो वर्तमान और भविष्य को रूपाकार देने में सक्रिय है। वे अतीत के अध्ययन को मानव के ऐसे संघर्ष के रूप में देखते हैं जिससे मानव जीवन समृद्ध हुआ है। वे मानते हैं कि बच्चों के लिए इतिहास अध्ययन का आरंभ सुदूर अतीत से शुरू करने की बजाए आस-पास से होना चाहिए। क्योंकि सुदूर अतीत मौजूदा हितों और उद्देश्यों से भी दूर है।*

यदि इतिहास को सिर्फ अतीत के लेखा-जोखा के तौर पर देखा जाए तो इसका कोई आधार नहीं दिखता कि इसे आरंभिक शिक्षा के शिक्षाक्रम में कोई बड़ी भूमिका अदा करनी चाहिए। जो बीत गया सो बीत गया। जो अतीत है उसे सुरक्षित ढंग से दफन कर देना चाहिए। हमारे पास वर्तमान की कई जरूरतें हैं। आने वाले समय की दहलीज पर ऐसी पुकारें हैं जिन्हें बच्चे बीते हुए समय में गोते लगाने से नहीं सुन पाएंगे। लेकिन जब हम इतिहास के जरिए सामाजिक परिवर्तनों की ताकतों और उसकी रूपरेखा को समझते हैं तब ऐसा नहीं होता। हमारी सामाजिक जिंदगी हमारे साथ हमेशा होती है। अतीत और वर्तमान का फर्क सामाजिक जिंदगी के लिए कोई मायने नहीं रखता। चाहे यह वहां जी गई या यहां, यह मसला मामूली क्षणों का होता है। यह सामाजिक जीवन है जो वे सारे मकसद दिखाता है जो मनुष्य को एक-दूसरे के करीब लाते हैं और उन्हें अलग करते हैं, यह सामाजिक जीवन ही विश्लेषण करता है कि क्या होना चाहिए और क्या नुकसानदेह है। एक वैज्ञानिक इतिहासकार के लिए इतिहास चाहे कुछ भी हो, लेकिन एक शिक्षक के लिए यह एक अप्रत्यक्ष समाजशास्त्र है- समाज का यह अध्ययन उसके बनने की प्रक्रिया और संगठन के तौर तरीकों को उद्घाटित करता है। समकालीन समाज के अध्ययन की दिक्कत यह है कि समाज की भूलभुलैया में इस बात का कोई छोर नहीं मिलता कि सामाजिक व्यवस्था और उसके परिप्रेक्ष्य को कहां से देखना शुरू करे। मौजूदा समाज काफी जटिल है और उस बच्चे के काफी करीब भी है इसलिए उसके बारे में कोई दृष्टि विकसित कर पाना मुश्किल है।

अगर इतिहास पढ़ाने का मकसद बच्चे को सामाजिक जीवन के मूल्यों के प्रति समझ विकसित करना है; इस बात की कल्पना कर पाना है कि वे कौन-सी ताकतें थीं जिन्होंने उनकी मदद की और इंसान को एक-दूसरे के करीब लाईं और कौन-सी ताकतें थीं जिन्होंने उन्हें आगे बढ़ने से रोका; तो इस मकसद के लिए विषय की प्रस्तुति में एक गतिशीलता और सक्रियता लानी होगी। इतिहास को इस तरह प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए कि अतीत में ऐसा-ऐसा हुआ और इसके वैसे-वैसे परिणाम हुए। बल्कि इसे एक सक्रिय काम करने वाली ताकत की तरह प्रस्तुत किया जाना चाहिए। उद्देश्य ये होना चाहिए कि प्रेरणा स्रोत साफ दिखाई पड़ें। इतिहास का अध्ययन सिर्फ सूचनाओं को संचित करना नहीं है बल्कि उन सूचनाओं का इस्तेमाल एक ऐसी तस्वीर बनाने में होना चाहिए जहां दिखे कि मनुष्य ने ऐसा क्यों और किस लिए किया, किस तरह उसने सफलताएं अर्जित कीं और क्यों वह कई जगह विफल रहा।

जब हम इतिहास को गतिमान रूप में समझते हैं तो इसके आर्थिक और औद्योगिक कारकों पर जोर दिया जाता है। ये वे तकनीकी बातें हैं जो उन समस्याओं का जिक्र करती हैं जिनसे मानवता लगातार जूझती रही है, मसलन कैसे जिएं, किस तरह प्रकृति को इस्तेमाल करते हुए मानव जीवन को समृद्ध किया जाए। मानव सभ्यता

**लेखक परिचय :** जॉन डिवी (1859-1952) जाने-माने अमेरिकी शिक्षा दार्शनिक। प्रगतिशील शिक्षा व्यवस्था के अगुवा चिन्तक रहे हैं और दुनियाभर में शिक्षा चिन्तन पर आज भी गहरा प्रभाव है।

**प्रकाशन :** 'डेमोक्रेसी एण्ड एज्युकेशन', 'द स्कूल एण्ड सोसायटी', 'द चाइल्ड एण्ड करिक्युलम', 'हाऊ वी थिंक', 'एक्सपिरियेंस एण्ड नेचर' और 'माई पैडागॉजिक क्रीड'।

में एक बड़ा कदम तब उठा जब मानव की बौद्धिक अभिव्यक्ति ने खुद को प्रकृति की अनिश्चित-सी पराधीनता से खुद को मुक्त कर लिया और यह जाहिर किया कि किस तरह वह इन संसाधनों को अपने उद्देश्यों को हासिल करने के लिए सहयोगी बना सकता है। आज जिस सामाजिक दुनिया में बच्चा रहता है, वह इतनी साधन सम्पन्न और संपूर्ण है कि यह अंदाजा लगाना मुश्किल है कि यह सब किस कीमत पर हो रहा है। कितनी कोशिशें इसके पीछे छिपी हुई हैं। मानव के पास विस्मयकारी उपकरण हाथ में तैयार हैं। बच्चा इन तैयार संसाधनों को सहज अर्थों में ही लेता है। बच्चे को हम विरासत में मिले ज्ञान, उपकरणों और पदार्थों से परे हटाकर उसका सामना सीधे प्रकृति से करा सकते हैं। और इस तरह कदम-दर-कदम वह यह समझ सकता है कि मानव ने अपनी परिस्थितियों की जरूरत के मुताबिक कैसे हथियारों, औजारों के बारे में सोचा और उन परिस्थितियों को अपने काबू में किया। और इस क्रम में वह यह भी समझ सकता है कि इन नए संसाधनों ने कैसे विकास के नए क्षितिज खोले और इस क्रम में कैसे नई समस्याएं पैदा हुईं। मानव का औद्योगिक इतिहास महज भौतिक और उपयोगितावादी मसला नहीं है। ये मसला बौद्धिकता का है। औद्योगिक इतिहास के दस्तावेज हमें ये बताते हैं कि मानव ने किस तरह सोचना सीखा, ये सोचा कि बदलाव कैसे हो ? ये सोचा कि परिस्थितियों को अपने जीवन के अनुरूप कैसे बदलें कि मानव जीवन ही बदल जाए। ये एक तरह से एक नैतिक दस्तावेज भी है, जहां यह पता चलता है कि आदमी ने अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए हालातों को धैर्यपूर्वक अपने पक्ष में किया।

आदमी कैसे रहता है, यह सवाल उस खास दिलचस्पी से जुड़ा है, जिसके जरिए बच्चा ऐतहासिक सामग्री तक पहुंचता है। यह समझ का वह बिंदु है, जिससे वह अतीत में काम कर चुके लोगों का संबंध उन लोगों से जोड़ता है जिनके साथ वह रोजाना रहता है, बच्चे को ये चीज भेंट स्वरूप मिलती है कि वह इन संबंधों को सहानुभूतिपूर्ण तरीके से समझ सके।

बच्चा जब मानव जीवन के अतीत, उनके औजारों, उनके किए गए नए आविष्कारों तथा उनके जीवन बदलने की प्रक्रिया में दिलचस्पी रखता है तो वह अपने क्रियाकलापों में वही सब करने को उत्सुक रहता है, मसलन बर्तन बनाना, चीजों को पुनः संभालना। वह उनकी सफलताओं और समस्याओं को इसी संदर्भ में समझता है कि उन्हें प्रकृति से कौन से संसाधन उपलब्ध थे और कौन-कौन सी समस्याएं उनके सामने थीं क्योंकि बच्चे की दिलचस्पी मैदानों, जंगलों, समुन्दरों और पहाड़ों में होती है। इस तरह वह एक ऐसे प्राकृतिक वातावरण की परिकल्पना करके अध्ययन कर रहा है जिसमें अतीत में लोग रहते थे। वह यह समझ और जानकारी तब तक हासिल नहीं कर सकता है जब तक कि उन प्राकृतिक कारकों और स्वरूपों के जरिए उस अतीत को न समझे, जिसमें वह खुद रहता है। व्यापक अर्थों में, इतिहास में दिलचस्पी उसके प्रकृति के अध्ययन में उसे अधिक मानवीय रंग प्रदान करती है। प्रकृति का ज्ञान उसके इतिहास के अध्ययन को और अधिक प्रभावी और सटीक बनाता है। यह इतिहास और विज्ञान का प्राकृतिक साहचर्य है।

इसी तरह सामाजिक जीवन की गहरी समझ बनाने में इतिहास शिक्षण में जीवनी शैली एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि कोई भी ऐतिहासिक सामग्री जब व्यक्तिगत रूप में प्रस्तुत की जाती है और उसे कुछ नायक चरित्रों के जरिए बताया जाता है तो बच्चों को अधिक आनंददायी लगती है। ये संभव है कि आप जीवनियों का एक ऐसा संकलन तैयार कर लें जो कहानियों जैसा रोचक और रोमांचकारी हो लेकिन वह बच्चे को सामाजिक जीवन के जरा भी नजदीक ले जाने में सफल न हो। ऐसा तब होता है जब कथा के नायक का उसके अपने सामाजिक परिवेश से कोई वास्ता नहीं दिखता और बच्चे को उन सामाजिक स्थितियों से रूबरू नहीं कराया जाता जिन्होंने नायक को क्रियाकलापों के लिए प्रेरित किया या नायक के क्रियाकलापों का उस समाज के विकास पर कोई असर हुआ। यदि जीवनी को सामाजिक जरूरतों और उपलब्धियों के नाटकीय बखान की तरह प्रस्तुत किया जाता है, यदि बच्चे की कल्पना में सामाजिक खामियों और समस्याओं की तस्वीर बनती है जिनका सामना लोगों ने किया और नायक उनसे जिन तरीकों से निपटा, तो जीवनी सामाजिक अध्ययन का जरिया बन जाती है।

सामाजिक उद्देश्यों के प्रति इतिहास की यह चेतना उसे मिथक, परीकथा या महज एक साहित्यिक दस्तावेज बनने से रोकती है। मैं यहां हर्बर्टियन स्कूल के उस नजरिए को बताने से खुद को रोक नहीं पा रहा जिसके चलते उन्होंने इतिहास के प्राथमिक पाठ्यक्रम को समृद्ध किया। इसने अक्सर इतिहास और साहित्य के मौजूदा रिश्ते को उलटकर देखा है। यदि इरादों की बात की जाए तो अमेरिकन औपनिवेशिक इतिहास और डेनियल डे फो के रॉबिन्सन क्रूसो एक मायने में समान हैं। दोनों ही उस आदमी का प्रतिनिधित्व करते हैं कि जिसने सभ्यता निर्मित की, विचार की एक परिपक्व अवस्था तक पहुंचे, जिसने कार्य करने के आदर्शों और साधनों को विकसित किया लेकिन अचानक ही अपने रूखे और आक्रामक व्यवहार पर नियंत्रण करने के लिए उन संसाधनों द्वारा ही पीछे धकेल दिए गए और उन्होंने अपनी बुद्धिमानी और कौशल के बल पुनः सफलता हासिल की। लेकिन जब रॉबिन्सन क्रूसो किताब की सामग्री हम तीसरी-चौथी कक्षा के बच्चों के पाठ्यक्रम में शामिल करते हैं तो क्या ऐसा नहीं लगता कि हम घोड़े के सामने घास के बजाय पूरी गाड़ी रख रहे हैं! क्यों हम बच्चों को ज्यादा व्यापक यथार्थ, उसको

प्रभावित करने वाली शक्तियों और इसको अधिक जीवन्त रूप में प्रस्तुत नहीं कर सकते हैं और इसके लिए रॉबिन्सन क्रूसो को एक विशिष्ट मामले के तौर पर एक आदर्श कल्पना मान सकते हैं जिसमें कुछ उसी तरह की समस्याएं और क्रियाकलाप मौजूद हैं। फिर, बर्बर और असभ्य जीवन के अध्ययन के रूप से जो भी उपादेयता हो, इसे सीधा समझने के बजाय *हैवाथा* के माध्यम से क्यों न समझें! इस कविता का इस्तेमाल करते हुए उसे आदर्श और मर्मस्पर्शी बनाने के लिए उन हालातों और संघर्षों को बच्चे के सामने रखा जाए जिनका वह पहले एक विशिष्ट रूप में महसूस कर चुका है। अगर भारतीयों के जीवन पर लिखी कविता में कुछ शाश्वत सवाल और सामाजिक जीवन के पहलू नहीं हैं तो शिक्षण-प्रक्रिया में उसके होने के कोई मायने नहीं हैं। और अगर उसमें ऐसा कुछ है तो वह उभरकर बाहर आना चाहिए। ऐसा न हो कि तत्व शुद्ध साहित्यक प्रस्तुतीकरण के सौन्दर्य में खो जाए।

मैं समझता हूं कि ठीक इसी तरह किसी चरित्र और सामाजिक संबंधों की उनकी प्राकृतिक निर्भरता की समझ हमें इस बात के लिए समर्थ बनाती है कि हम ऐतिहासिक निर्देशों में कालक्रमानुसार व्यक्त तथ्यों की महत्त्व को समझें। अतीत को पर्याप्त अहमियत देते हुए सभ्यता के उन वांछित और सफल चरणों को समझ सकते हैं जो फरात और नील नदियों के किनारे विकसित हुईं और यूनान और रोम तक आईं। कहने का आशय यह है कि वर्तमान अतीत पर निर्भर है और अतीत का हर चरण अपने भी अतीत पर।

यहां इतिहास के तार्किक और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के बीच एक द्वंद्व पैदा होता है। यदि मकसद यह समझने का है कि सामाजिक जीवन क्या है और यह कैसे चलता है तो निश्चित रूप से व्यवस्था ये होनी चाहिए कि बच्चा दूर की चीजों के बजाए अपने आस-पास की चीजों को पहले देखे-समझे। बेबीलोन या मिस्र की सभ्यता को समझने की दिक्कत यह नहीं है कि समय के हिसाब से वह बहुत पुरानी हैं, बल्कि मौजूदा हितों और सामाजिक उद्देश्यों से उसकी दूरी है। दिक्कत यह है कि इस तरह की चीजें बच्चों के लिए सहज नहीं होतीं और न ही इनको सर्वव्यापक रूप से देखा जा सकता है या कम से कम इन चीजों के साथ ठीक से काम नहीं किया जाता है। और जब इस तरह की चीजों के बारे में बताया जाता है तो उसमें से वे तत्व गायब हो जाते हैं जो वर्तमान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। इसके घटकों को बच्चों के स्तर पर प्रस्तुत नहीं किया जाता। इसकी महत्त्वपूर्ण बातों को इस तरह प्रस्तुत किया जाता कि कोई विशेषज्ञ भी शायद ही समझ पाए। हालांकि इस तरह की चीजों में ऐसी बातें होती हैं जो आगे आने वाले लोगों के लिए महत्त्वपूर्ण रही हैं और समय के साथ इन चीजों ने घटनाओं पर प्रभाव भी डाला है। लेकिन बच्चा अभी उस स्तर तक नहीं पहुंचा कि वह इस तरह के अमूर्त और विशिष्ट योगदानों को समझ सके। उसके लिए तो उन खास संबंधों, हालातों और क्रियाकलापों की एक तस्वीर को समझना ही पर्याप्त है। इस दृष्टि से बेबीलोन और मिस्र की जटिल और कृत्रिम जिंदगी के बजाय प्रागैतिहासिक काल की जिंदगी उसके ज्यादा करीब है।

जब बच्चा संस्थाओं को समझने में समर्थ होता है तो वह यह भी देखता है कि वह क्या खास संस्थागत विचार है जो हर ऐतिहासिक देश के लिए जरूरी है और उसमें कौनसे कारक है जिन्होंने संस्थाओं की मौजूदा जटिलता पर असर डाला है या उन्हें खड़ा करने में योगदान दिया है। लेकिन यह तब शुरू होता है जब बच्चा दूसरे क्षेत्र के अमूर्त कारणों को समझने में समर्थ होता है। दूसरे शब्दों में, जब वह सैकण्डरी शिक्षा के स्तर पर पहुंचता है तो यह सब समझने लगता है।

साधारण रूप से हम तीन चरण पहचान सकते हैं। पहला एकदम साधारण और सरलीकृत इतिहास है- एक ऐसा इतिहास जो मुश्किल से कालक्रम और स्थानीय लिहाज से समझा जाए लेकिन यह बच्चे को एक नजरिया देता है कि वह सहानुभूति के साथ सामाजिक जीवन के विभिन्न क्रियाकलापों को समझे। इस चरण में छह साल के बच्चे का वह काम शामिल है कि वह अपने देश और शहर में विभिन्न व्यवसायों में लगे लोगों के बारे में अध्ययन करता है। सात साल का बच्चा आविष्कारों का आकलन और जीवन पर उनके असर का अध्ययन करता है, आठ साल का बच्चा देशांतर, तलाशों और खोज के बड़े अभियानों को समझता है जिन्होंने एक व्यापक फैले संसार को एक ही सूत्र में जोड़ा।

पहले दो सालों का काम स्पष्ट तौर पर किसी आदमी के लिए एकदम स्वतंत्र है। ऐतिहासिक आंकड़ों को एक सीधे सीधे बताया जाए।

इसी समय वैयक्तिक कारकों की जानकारी देते समय नाटकीय तरीके से चीजों को समझाए जाने की गुंजाइश भी है। महान अन्वेषकों और खोजी लोगों के हवाले से बताया जा सकता है कि क्या स्थानीय है और क्या खास, और ये भी उस व्यक्ति और उसके देशकाल पर निर्भर करेगा।

ये हमें एक दूसरे कालखण्ड से अवगत कराता है जहां स्थानीय परिस्थितियां और लोगों की कुछ खास संस्थाओं के क्रियाकलाप अहम हो जाते हैं। और ये चीजें बच्चे की समझने की क्षमता के विकास पर निर्भर करती हैं जिसमें बच्चा सीमित और सकारात्मक तथ्यों को समझ सके। मसलन शिकागो और यूएस वे क्षेत्र हैं जहां बच्चा प्राकृतिक रूप से तीन साल तक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अपने लिए सामग्री लेता है। इसके बाद का तीसरा साल संक्रमण का

है- जहां वह अमेरिकन जिंदगी को यूरापीय जीवन से जोड़ता है। इस समय तक बच्चे को इसके लिए तैयार रहना चाहिए कि वह केवल सामाजिक जीवन को सामान्य तरीके से ही न समझे न ही वह केवल उस जीवन को समझे जिससे वह सबसे ज्यादा परिचित है बल्कि विभिन्न किस्म के सामाजिक जीवन को समझने में समर्थ रहे। सबको उपयुक्त महत्त्व के साथ तथा उसके खास योगदान के साथ समझने की इस प्रक्रिया में वह सम्पूर्ण विश्व के इतिहास से परिचित होता है। इसी के अनुसार अगले चरण में कालानुक्रम व्यवस्था का अनुसरण किया जाता है। प्राचीन विश्व से शुरुआत कर यूरोप के इतिहास तक आना और फिर अमेरिकन इतिहास से उसे अलग करना।

इस कार्यक्रम को समस्या के इकलौते निदान के रूप में न देखें, बल्कि इसके योगदान पर ध्यान दें; इसकी परिणतियों को देखें, महज विचार को नहीं बल्कि उपयुक्त प्रयोग करते हुए साल दर साल विषय बदले जाएं। चरणबद्ध रूप से ऐसी सामग्री उपलब्ध कराई जाए जो बच्चे पर महत्त्वपूर्ण पकड़ बनाए, और इस जरिए सामाजिक जीवन के सिद्धांतों और तथ्यों का पर्याप्त ज्ञान हो और कालांतर में विशिष्ट ऐतिहासिक अध्ययन की आधारशिला बनाए। ◆

**भाषान्तर : रामकुमार**

# बच्चे और अतीत

शुरुआती लालन-पालन या 'प्राथमिक सामाजीकरण' के तौर पर बच्चों में अतीत की सामूहिक स्मृतियों का एक बड़ा हिस्सा उपलक्षित ज्ञान के रूप में संचारित किया जाता है। इस रूप में अतीत से संबंधित ज्ञान वयस्क और बच्चों के रोजमर्रा के वार्तालाप में बारीकी से बुना हुआ हस्तांतरित होता है। दूसरी तरह के ज्ञान में भाषा, उपयुक्त व्यवहार एवं अनुष्ठानों का ज्ञान सम्मिलित है। परिवार एवं समाज द्वारा किए गए अनुष्ठानों एवं भक्ति की भाषा और तरीकों में भी अतीत का ज्ञान बुना हुआ होता है। अपने परिवार के अतीत के अव्यक्त ज्ञान पर किसी प्रश्न या तार्किक जिज्ञासा की अनुमति नहीं होती। वास्तव में 'समझ बनाने' की तो कोई उम्मीद ही नहीं रखी जाती। विरासत के रूप में अतीत बच्चों से खुद को उसमें डुबो देने की अपेक्षा रखता है, इस आशय से कि बच्चे अतीत की श्रेणियों को अपने भाषायी, भावनात्मक और नीतिगत व्यवहार में आत्मसात करना सीखेंगे। इस तरह अतीत को एक विशाल सागर की तरह समझा जा सकता है जिसकी गहराई में व्यक्ति जाए, चाहे न जाए, गहरा तो वह है ही।

जैसा कि यह रूपक इंगित करता है, अतीत को हम उन अस्थाई श्रेणियों में नहीं बांट सकते हैं जैसी श्रेणियां इतिहासकार हमारे सामने इतिहास को एक व्यक्त ज्ञान बनाने के लिए रखते हैं। सामूहिक अतीत के उपलक्षित ज्ञान से जब बच्चे का सामाजीकरण हो जाता है तो इसके प्रभाव के विश्लेषण या उस पर चिन्तन की कोई सम्भावना नहीं बचती। लकीर के फकीर की तरह बीते समय की हर बात स्वीकार्य व अकाट्य होती है। किसी कैलेंडर में व्यवस्थित न करके अतीत का रूपांतरण सुखद या दर्दनाक प्रमुख घटनाओं के गुच्छे के रूप में कर दिया जाता है। ये घटनाएं स्थानों और महान लोगों की छवियों को लेकर बुनी जाती हैं जो निश्चय ही बहुत ज्यादा महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। इस तरीके से संजोई हुई घटनाओं में धार्मिक-पौराणिक कथाओं एवं इतिहास का सांयोगिक मिश्रण होता है जिसमें पूर्व इतिहास भी शामिल है। स्मृतियों के इस अंधाधुंध भंडार में हारे-जीते संग्राम, अकाल, प्रवसन की गाथाएं और उत्सव इत्यादि शामिल हैं। बच्चा यह भंडार सामाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान परिवार से उत्तराधिकारी की तरह पाता है। परिवार संप्रेषण के जो तरीके इस्तेमाल करता है उनमें किस्सागोई या बातचीत शामिल हो सकती है। लेकिन ये तरीके बच्चे की स्मृति में जो अवशेष बनाते हैं, वे आवश्यक रूप से ज्ञान का एक नीरव संग्रह होते हैं।

**प्रो. कृष्ण कुमार**

**('मेरा देश, तुम्हारा देश' से अंश)**